सत्यमेव जयते

କୁଇ ଉରାଡ଼ିପୁତି

କୁଇ ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକା

कुइ भाषा प्रवेशिका

KUI PRIMER

CIIL-NCERT Primer Series

ई-पाठशाला

क्यूआर (QR) कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पांस कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला के माध्यम से ई-सामग्री प्राप्त करें।

1. प्ले स्टोर से ई-पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें
2. क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें
3. स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें
4. लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें
5. उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई-पाठशाला द्वारा ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें– https://epathshala.nic.in/topics.php पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। **दीक्षा** का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।

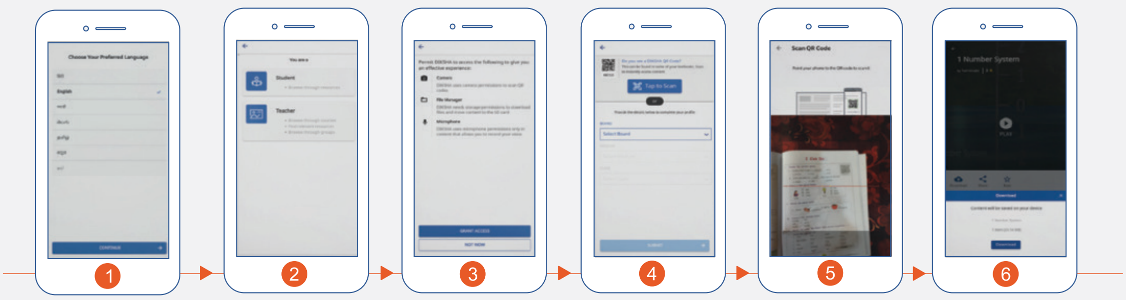

1. अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें
2. अपनी भूमिका चुनें–शिक्षक या विद्यार्थी
3. पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें
4. क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें
5. कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें
6. क्लिक करके क्यूआर कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें– https://diksha.gov.in/resources पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

“ जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।”

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

କୁଇ ଉରାଡ଼ିପୁଟି

କୁଇ ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକା

कुइ भाषा प्रवेशिका

KUI PRIMER

भारतीय भाषा संस्थान

Central Institute of Indian Languages

(Department of Higher Education Ministry of Education, GOI)

Manasagangotri, Mysuru - 570 006

Ph: 0821 2515820 (Director)

email: ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

National Council of Educational Research and Training

Sri Aurobindo Marg

New Delhi - 110016

Ph: 011 2696 2580

email: dceta.ncert@nic.in

କୁଇ ଉରାଡ଼ିପୁତି

କୁଇ ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକା

कुइ भाषा प्रवेशिका

KUI PRIMER

A basal reader of Kui alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi level and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors
Dinesh Prasad Saklani
Shailendra Mohan
Sujoy Sarkar
Sanjaya Kumar Bag

ISBN: 978-81-19411-93-1

First Edition: March 9, 2024

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024
All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: G. Yuvaraj
Cover Photo: Bapuji Pradhan

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

सत्यमेव जयते

75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

मंत्री
शिक्षा; कौशल विकास
और उद्यमशीलता
भारत सरकार
Minister
Education; Skill Development
& Entrepreneurship
Government of India

संदेश

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित भारत 2047 के संकल्प के मार्ग का प्रमुख अवयव भारतीय भाषाएँ हैं, जिनसे ज्ञान-विज्ञान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुंच देश के समस्त बच्चों तक सुनिश्चित हो सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफ़ारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब छात्रों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसीलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की आवश्यकता है।

अतः हमने एन.सी.ई.आर.टी तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा/ओं तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों के लिए बहुत उपयोगी साबित होंगी।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा
स्वच्छ भारत
कौशल भारत, कुशल भारत

MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
MSDE - Room No. 516, 5th Floor, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110001, Phone : 91-11-23465810, Fax : 011-23465825
E-mail : minister.sm@gov.in, minister-msde@gov.in

प्राक्कथन

भाषा समाज का एक अभिन्न अंग है। भाषा संस्कृति का एक उपादान है, समुदाय की पहचान है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी है। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है-एक ओर भारत की भाषिक विविधता को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। साथ ही यह भी बताता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारतीय संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं के मुद्दों पर हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित बिंदु है कि बच्चों के पास भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है, अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों-ये किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को '*बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति*' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह मज़बूत नींव न केवल भविष्य में विद्यालय एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित हों।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं) प्राइमरों(का लक्ष्य छोटे बच्चों या अन्य भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से सुपरिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढ़ीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये पुस्तिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों, जैसे- बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी। शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी का उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार; एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

मार्च, 2024
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् , नई दिल्ली

भूमिका / Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्याधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अधययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएं बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये बाद में बताए गये अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilized efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to 'Viksit Bharat'. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognising, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarizes children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

ଭାରତ ଏକ ବହୁଭାଷୀ ଦେଶ ଯେଉଁଠାରେ ବିଭିନ୍ନ ଅଞ୍ଚଳରେ ଅନେକ ଭାଷା କୁହାଯାଉଛି । ଆମେ ଆମ କଥୋପକଥନରେ ଏକାଧିକ ଭାଷା ବ୍ୟବହାର କରୁ, ଯାହା ଆମକୁ ଏକଜୁଟ କରେ, ଆମକୁ ଆନନ୍ଦିତ କରେ; ଏହା ଆମ ଦେଶର ସାଧାରଣ ବୈଶିଷ୍ଟ୍ୟ । ଜାତୀୟ ଶିକ୍ଷା ନୀତି (ଏନଇପି) ୨୦୨୦ ଏହି ଧାରଣାକୁ ଦୃଢ଼ତାର ସହ ଗୁରୁତ୍ୱ ଦେଇଥାଏ । ଭାରତର ବହୁଭାଷୀ ବ୍ୟବସ୍ଥା ହେଉଛି ଏକ ବିଶାଳ ସମ୍ପଦ, ଯାହାକୁ ଦେଶର ସାମାଜିକ, ସାଂସ୍କୃତିକ, ଅର୍ଥନୀତିକ ଏବଂ ଶିକ୍ଷାଗତ ବିକାଶ ପାଇଁ ଦକ୍ଷତାର ସହ ବ୍ୟବହାର କରିବାର ଆବଶ୍ୟକତା ରହିଛି । ଏହା ଶିକ୍ଷାକ୍ଷେତ୍ରରେ ପ୍ରତ୍ୟେକ ସ୍ତରରେ ବହୁଭାଷିକତାକୁ ପ୍ରୋତ୍ସାହିତ କରିବାକୁ ପ୍ରେରିତ କରିଥାଏ ଯାହାଦ୍ୱାରା ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନେ ନିଜ ନିଜ ଭାଷାରେ ଅଧ୍ୟୟନ କରିବାର ସୁଯୋଗ ପାଇବେ । ସମସ୍ତ ଭାରତୀୟ ଭାଷାରେ ଶିକ୍ଷାଦାନ ଓ ଶିକ୍ଷଣ ସାମଗ୍ରୀ ସୃଷ୍ଟି ହେବାଦ୍ୱାରା ଏହି ବହୁଭାଷୀ ସମ୍ପଦ ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ ଯାହା 'ବିକଶିତ ଭାରତ' ପାଇଁ ପଥ ପ୍ରଶସ୍ତ କରିବ । ଏନଇପି ୨୦୨୦ ସହିତ ସମନ୍ୱୟ ରକ୍ଷାକରି ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ଶ୍ରେଣୀର ଶିକ୍ଷଣ ସାମଗ୍ରୀ ବିକାଶ ପାଇଁ ଏକ ବ୍ୟାପକ ଏବଂ ସମନ୍ୱିତ ଆଭିମୁଖ୍ୟର ଆବଶ୍ୟକତା ରହିଛି ଯାହା ଭାରତର ପ୍ରତ୍ୟେକ ଅଞ୍ଚଳର ଅନନ୍ୟ ଭାଷାଗତ ଏବଂ ସାଂସ୍କୃତିକ ବୈଶିଷ୍ଟ୍ୟକୁ ଦର୍ଶାଏ । ଏହି ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକାର ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ହେଉଛି ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ଶ୍ରେଣୀର ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କୁ ପଢ଼ିବା, ଲେଖିବାରେ ପାରଦର୍ଶିତା ପ୍ରଦାନ କରିବା, ସେମାନଙ୍କର ସୃଜନଶୀଳତା ତଥା ଆଲୋଚନାତ୍ମକ ଚିନ୍ତାଧାରାକୁ ବୃଦ୍ଧି କରିବା । ଏହି ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକା ପୁସ୍ତକରେ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ଶବ୍ଦର ଆରମ୍ଭ, ମଝି ଓ ଶେଷ ସ୍ଥାନରେ ଅକ୍ଷରର ବ୍ୟବହାର ଏବଂ ସେହି ଶବ୍ଦର ଏକ କିମ୍ବା ଏକାଧିକ ଅର୍ଥ ସହିତ ପରିଚିତ କରିବାକୁ ପ୍ରୟାସ କରାଯାଇଛି । ଶେଷରେ ସେହି ଅକ୍ଷରଗୁଡ଼ିକୁ ଅଭ୍ୟାସ କରି ଲେଖିବା ପାଇଁ ଉଦାହରଣ ପ୍ରଦାନ କରାଯାଇଛି । ଏଥିରେ ଦିଆଯାଇଥିବା କବିତା ତଥା ଗୀତ ପିଲାମାନଙ୍କର ଭାଷା ବିକାଶ, ଜ୍ଞାନକୌଶଳ ଓ ସ୍ମରଣ ଶକ୍ତିକୁ ଉନ୍ନତ କରିବାରେ ସାହାଯ୍ୟ କରିବ ।

मार्च, 2024
मैसूरू

प्रो. शैलेंद्र मोहन
निदेशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरू

CIIL-NCERT Primer Series: Kui Primer Development Team

Guidance
Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi
Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru
Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors
Amarendra P. Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology (CIET), NCERT, New Delhi
Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Basanta Kumar Panda, Project Director, Centre of Excellence for Studies in Classical Odia, Bhubaneswar
Parmanand Patel, State Coordinator, Scheduled Castes and Scheduled Tribes Research and Training Institute (SCSTRTI), Bhubaneswar
Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi
Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Binay Patnaik, Senior Researcher cum Chief Consultant, NCERT, New Delhi
Pramod Kumar, Assistant Professor, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak
Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru

Member Coordinators
Sujoy Sarkar, Lecturer-cum-Junior Research Officer, CIIL, Mysuru
Sanjaya Kumar Bag, Odia Lecturer, Eastern Regional Language Centre (ERLC), CIIL, Bhubaneswar

Resource Persons
Bapuji Pradhan, Teacher, Demingia Sevashram School, Daringbadi, Kandhamal
Udhaba Kanhar, Teacher, Daka Sevashram School, Balliguda, Kandhamal
Srikant Mallick, Kui Author, Borikia, Midiakia, Kurttamgarh, Kandhamal
Anita Kumari Mallick, Teacher Educator, DIET, Tikabali, Kandhamal
Sudipta Bhattacharjee, Senior Resource Person (SRP), Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages (SPPEL), CIIL, Mysuru
Hilal Ahmad Dar, Junior Resource Person (JRP), SPPEL, CIIL, Mysuru

Reviewer
Anuj Mohan Pradhan, Controller of Finance & Accounts, National Environmental Engineering Research Institute (NEERI), Nehru Marg, Nagpur
Lankeswar Kanhar, Head Master, Govt. U.P. School, Barakhama, Baliguda, Kandhamal

Design Team
Saravanan A S, Graphic Editor, SPPEL, CIIL, Mysuru
Nandakumar L, JRP (Technical), National Translation Mission (NTM), CIIL, Mysuru
Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru
Puttaraju K, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
G. Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer, anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକା ବହି ପଢ଼େଇବେ କିପରି

କନ୍ଧ ଭାରତର ଅନ୍ୟତମ ପ୍ରାଚୀନ ଜନଜାତି । କନ୍ଧ ସମ୍ପ୍ରଦାୟ କନ୍ଧମାଳ ଜିଲ୍ଲାର ପ୍ରାୟ ସମସ୍ତ ବ୍ଲକ ବ୍ୟତୀତ ଗଜପତି, ରାୟଗଡ଼ା, କୋରାପୁଟ, ଗଂଜାମ, ନୟାଗଡ଼, ବୌଦ୍ଧ, କଳାହାଣ୍ଡି, ନବରଙ୍ଗପୁର ଆଦି ଜିଲ୍ଲାରେ ମଧ୍ୟ ବସବାସ କରନ୍ତି । କନ୍ଧମାନଙ୍କ ଭାଷା କୁଇ କାତା ଭାବରେ ପରିଚିତ । ୨୦୧୧ ମସିହା ଜନଗଣନା ଅନୁଯାୟୀ କନ୍ଧ ଜନଜାତିର ଜନସଂଖ୍ୟା ୯୫,୯୦,୭୫୬ । ତେବେ, ସମ୍ପ୍ରତି ଶିକ୍ଷାର ଅଗ୍ରଗତି ଓ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ସୁବିଧା ସୁଯୋଗ ଯୋଗୁଁ ଅନ୍ୟ ଅନେକ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ସେମାନେ ନିଜକୁ ନିଯୁକ୍ତ କରିପାରିଛନ୍ତି । ଅନ୍ୟ ଜନଜାତି ଭଳି କନ୍ଧମାନେ ମଧ୍ୟ ପରସ୍ପର ଭିତରେ ସାମାଜିକ ସାଂସ୍କୃତିକ ସହଭାଗୀତା ସହ ଗୋଷ୍ଠୀଗତ ଓ ଶାନ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣ ଜୀବନଯାପନ କରିଥାନ୍ତି ।

ଭାରତର ନୂତନ ଶିକ୍ଷାନୀତି-୨୦୨୦ ତଥା ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ରୂପରେଖ-୨୦୨୨ ଅନୁସାରେ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ତିନିବର୍ଷରୁ ଆଠବର୍ଷ ଯାଏଁ ମାତୃଭାଷା, ଘରେ କହୁଥିବା ଭାଷା ବା ସ୍ଥାନୀୟ ଭାଷା ତଥା ଆଞ୍ଚଳିକ ଭାଷାରେ ଶିକ୍ଷାଦାନ ବ୍ୟବସ୍ଥା ରହିଛି । ଭାରତର ଜନଜାତିବହୁଳ ଅଞ୍ଚଳରେ ସ୍କୁଲ ଶିକ୍ଷାଦାନର ଭାଷାକୁ ପିଲାମାନେ ବୁଝିପାରୁନଥିବା ହେତୁ ଶିକ୍ଷା ଓ ଶିକ୍ଷଣ ପ୍ରକ୍ରିୟାରେ ବିଭିନ୍ନ ସମସ୍ୟା ଦେଖାଯାଏ । ତେଣୁ କେନ୍ଦ୍ର ସରକାର ପିଲାଙ୍କୁ ବାଲ୍‌ବାଟିକାରୁ (ତିନିରୁ ପାଞ୍ଚ ବର୍ଷ) ଆଦ୍ୟ ସାକ୍ଷରତା (ପ୍ରଥମରୁ ଦ୍ୱିତୀୟ ଶ୍ରେଣୀ) ଯାଏଁ ମୌଳିକ ସାକ୍ଷରତାର ପ୍ରଚଳନ କରିଛନ୍ତି । ଏଥିପାଇଁ ସ୍ଥାନୀୟ ଗୀତ, ଗପ ଓ କଥୋପକଥନ ଜରିଆରେ ପ୍ରଥମେ ପିଲାଙ୍କ ମୌଖିକ ଭାଷା ବିକାଶ କରି ସେମାନଙ୍କୁ ମୁଖର କରିବାକୁ ହେବ । ଏଥି ସହିତ ପିଲାଙ୍କର ଧ୍ୱନି ପରିଚୟ, ବର୍ଣ୍ଣ ପରିଚୟ, ପଢ଼ିବା ଓ ଲେଖିବା ଅଭ୍ୟାସ ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକା ପୁସ୍ତକ ଅନୁସାରେ କରାଯିବ ।

ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ଶ୍ରେଣୀରୁ ତୃତୀୟ ଶ୍ରେଣୀଯାଏ ଜନଜାତି ପିଲାଙ୍କୁ ମାତୃଭାଷାରେ ପଢ଼ାଇଲେ ସେମାନଙ୍କ ବୌଦ୍ଧିକ ବିକାଶ ସହିତ ସୃଜନ ଓ କଳ୍ପନାଶକ୍ତି ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ । କୁଇ ଭାଷାଭାଷୀ ପିଲାମାନେ ଯେହେତୁ ଘରେ ଓଡ଼ିଆରେ କଥାବାର୍ତ୍ତା କରନ୍ତି ନାହିଁ, ସେମାନେ ସ୍କୁଲରେ ମଧ୍ୟ ଓଡ଼ିଆ ବହିର ପାଠ ବୁଝିବାରେ ଅସୁବିଧାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୋଇଥାନ୍ତି । ଏହାର ମୂଳ କାରଣ ପିଲାଙ୍କୁ ମୌଳିକ ସାକ୍ଷରତା ସହିତ ପରିଚିତ କରାଯାଇ ନାହିଁ । ବାସ୍ତବରେ ଶ୍ରେଣୀରେ କିପରି ପିଲା ମାତୃଭାଷାରେ ପଢ଼ିବା ଓ ଲେଖିବା ସହିତ ଓଡ଼ିଆରେ ପଢ଼ିଲେଖି ପାରିବେ, ତାହାର ଏକ ସାର୍ଥକ ପଦ୍ଧତି ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ରୂପରେଖ ୨୦୨୨ରେ ବିସ୍ତୃତ ଭାବେ ଦିଆଯାଇଛି । ପିଲା ପଢ଼ିଲେଖି ଶିଖିବା ପ୍ରଥମ କଥା । ଏଣୁ ଏହି ପ୍ରବେଶିକା ପୁସ୍ତକରେ କୁଇ ଭାଷାର ସମସ୍ତ ଧ୍ୱନି, ବର୍ଣ୍ଣ ଓ ମାତ୍ରାକୁ ଆଧାର କରି ସେମାନଙ୍କ ସଂସ୍କୃତି ଓ ପରିବେଶରୁ ଶବ୍ଦ ସମ୍ପଦ ଦିଆଯାଇଛି ।

ବହୁଭାଷୀ ଶିକ୍ଷାର ଲକ୍ଷ୍ୟ ପିଲାଙ୍କ ଘରର ଭାଷାରୁ ପଢ଼ିବା ଲେଖିବା ଆରମ୍ଭ କରି ରାଜ୍ୟ ଭାଷାରେ ପଢ଼ିବା ଲେଖିବା ଶିଖାଇବା । ଏହି ଦୃଷ୍ଟିରୁ କୁଇ ଭାଷାରେ ପ୍ରସ୍ତୁତ ଏହି ପ୍ରବେଶିକା କୁଇ ଭାଷାଭାଷୀ ଅଞ୍ଚଳର ଶିକ୍ଷକ ଓ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କ ପାଇଁ ନିଶ୍ଚିତ ଭାବେ ଉପାଦେୟ ହେବ । ମୌଳିକ ସାକ୍ଷରତାର ଚାରିଗୋଟି ସୋପାନ ଅଛି । ସେଗୁଡ଼ିକ ହେଉଛି, କାହାଣୀ, ଗୀତ ଓ ଚିତ୍ରକୁ ନେଇ ପିଲାଙ୍କ ବୌଦ୍ଧିକ ଭାଷା ବିକାଶ କରିବା । ପିଲାଙ୍କୁ ବସ୍ତୁ ସଙ୍ଗେ ଶବ୍ଦର ସମ୍ପର୍କ ଚିହ୍ନାଇବା । ଶବ୍ଦର ଅକ୍ଷର ଚିହ୍ନିବା । ପ୍ରତ୍ୟେକ ଶବ୍ଦରେ ଥିବା ଅକ୍ଷରକୁ ପିଲା ଅଲଗା କରିବା । ଏହି ପ୍ରକ୍ରିୟା ପାଠ୍ୟଚର୍ଚ୍ଚାରେ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ, ଯାହା ଧ୍ୱନି ଓ ବର୍ଣ୍ଣର ସମ୍ପର୍କକୁ ବୁଝାଏ । ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକା ବହିଟିକୁ କିପରି ପଢ଼ାଇବେ ସେ ବିଷୟରେ ନିମ୍ନରେ ଉଲ୍ଲେଖ କରାଗଲା ।

ଧ୍ୱନି ପରିଚୟ: ପିଲାଏ ଚିତ୍ର ଦେଖି ବସ୍ତୁର ନାମ କହିବେ ଓ ଶିକ୍ଷକ ପଚାରିବେ ଚିତ୍ରର ନାମ କେଉଁ ଧ୍ୱନିରୁ ଆରମ୍ଭ ହେଉଛି, ଯଥା- 'ଅଡ଼ରି' ଚିତ୍ର ଦେଖି ତା'ର ପ୍ରଥମ ଧ୍ୱନି 'ଅ' ବୋଲି ପିଲା ଚିହ୍ନିବେ ।

ବର୍ଣ୍ଣ ପରିଚୟ: ପିଲାଙ୍କୁ ପ୍ରଥମେ ବୁଝାଇବେ 'ଅ' ବର୍ଣ୍ଣଟି କେମିତି ଦିଶୁଛି । ତା'ପରେ ଶବ୍ଦ ଭିତରୁ 'ଅ' ଅକ୍ଷର ଚିହ୍ନିବାକୁ କହିବେ । ତିନି ଚାରିଟି ଶବ୍ଦ ଭିତରୁ ପିଲାଏ 'ଅ' ଅକ୍ଷରର ଧ୍ୱନି ଉଚ୍ଚାରଣ କରିବେ ଓ 'ଅ' ଅକ୍ଷରକୁ ଲେଖିବାର ଅଭ୍ୟାସ କରିବେ ।

ପଢ଼ିବା: ପିଲାଏ ଚିତ୍ର ଦେଖି ନିଜ ଭାଷାରେ ଶବ୍ଦ କହିବେ । ସେହି ଶବ୍ଦରୁ ବାମରୁ ଡାହାଣକୁ ଆଙ୍ଗୁଠି ଲଗାଇ 'ଅଡ଼ରି' ପଢ଼ିବେ । ଅନ୍ୟ ଶବ୍ଦ ପଢ଼ି ସେହି ଶବ୍ଦର 'ଅ' ଯେଉଁଠି ଅଛି ପିଲାଏ ଚିହ୍ନିବେ ଓ କହିବେ । 'ଅ' ବର୍ଣ୍ଣଟି ଶବ୍ଦର ଆଦ୍ୟରେ ମଧ୍ୟରେ ବା ଶେଷରେ କେମିତି ରହିଛି ତାହା ଶିକ୍ଷକ ବୁଝାଇବେ ।

ଶିକ୍ଷକ କଳାପଟାରେ ପ୍ରବେଶିକା ବହିର 'ଅ' ପଢ଼ାଇଲା ବେଳେ, 'ଅଡ଼ରି' ସହିତ ଅନ୍ୟ କେତୋଟି ଶବ୍ଦ ବି ଲେଖିବେ । ତା'ପରେ ପିଲାମାନଙ୍କଦ୍ୱାରା ଶବ୍ଦଗୁଡ଼ିକୁ ପଢ଼ିବା ଓ ବର୍ଣ୍ଣ ଚିହ୍ନିବା କାମ କରିବେ । ଯେହେତୁ ସବୁ ଶବ୍ଦ ପିଲାଙ୍କ ପରିଚିତ ପରିବେଶରୁ ଆସିଛି ଓ ପିଲାମାନେ ବହିରେ ସେହି ଚିତ୍ର ଦେଖି ଚିହ୍ନିବା ସହ କହିବାରେ ସକ୍ଷମ, ତାକୁ ପଢ଼ିବାରେ ପିଲାଏ ସହଜ ଅନୁଭବ

କରିବେ । ଶିକ୍ଷକ ଶବ୍ଦଟିଏ ଲେଖି ତା'ର ପ୍ରତ୍ୟେକ ବର୍ଣ୍ଣକୁ ଅଲଗା ଅଲଗା ପଢ଼ିବାକୁ କହିବେ । ତା'ପରେ ବର୍ଣ୍ଣକୁ ଯୋଡ଼ି ପୂରା ଶବ୍ଦକୁ ପଢ଼ିବାକୁ କହିବେ । ଏଥିରେ ପିଲାର ବର୍ଣ୍ଣ ପରିଚୟ, ଶବ୍ଦ ପରିଚୟ ଓ ଧ୍ୱନି ପରିଚୟ ହେବ । ଶବ୍ଦଟିକୁ ଜଣେ ପିଲା ପଢ଼ିଲାବେଳେ ଅନ୍ୟ ପିଲାମାନେ ବି ତାଙ୍କ ସାଙ୍ଗରେ ସେହି ଶବ୍ଦକୁ ଉଚ୍ଚାରଣ କରିବେ । ଏହା ମିଳିତ ପଠନ ।

ଲିଖନ: ପ୍ରଥମେ ପିଲାଙ୍କୁ 'ଅଡ଼ରି' ଶବ୍ଦର 'ଅ' ଲେଖିବା ଶିଖାଇବେ । 'ଅ' ବାମରୁ ଡାହାଣକୁ କେମିତି କଲମ ଚଳାଇବେ ତାହା ଶିକ୍ଷକ କରିବେ । ଏହା ସହାୟକ ଲିଖନ । ତା'ପରେ ପିଲା ବହିରେ ଥିବା ଝାପ୍‌ସା ଅକ୍ଷରରେ ଉପରେ ଥିବା 'ଅ' ବର୍ଣ୍ଣ ଦେଖି ନିଜେ 'ଅ' ଲେଖିବେ । ପିଲାଏ ଲେଖିଲାବେଳେ ଓ ପଢ଼ିଲାବେଳେ ଶିକ୍ଷକଙ୍କ ସହାୟତା ଅତ୍ୟନ୍ତ ଆବଶ୍ୟକ ।

ପ୍ରତ୍ୟେକ ପୃଷ୍ଠାରେ ପିଲାଙ୍କ ମୌଖିକ ଭାଷା ବିକାଶ ପାଇଁ ଦୁଇ ତିନି ଧାଡ଼ିରେ ଗୀତ ଦିଆଯାଇଛି । ଶିକ୍ଷକ ସେସବୁକୁ ଗାଇ ବା ପଢ଼ି ପିଲାଙ୍କ ସଙ୍ଗେ ଆଲୋଚନା କରିବେ । ସ୍କୁଲ ଲାଇବ୍ରେରୀରୁ ଶିଶୁ କାହାଣୀ ବହି ନେଇ ମଧ୍ୟ ପିଲାଙ୍କ ଭାଷାରେ କାହାଣୀ କହି ଆଲୋଚନା କରିପାରିବେ । ମନେରଖିବେ, ପ୍ରଥମ-ଦ୍ୱିତୀୟ ଶ୍ରେଣୀର ପିଲାଙ୍କ ସଙ୍ଗେ ମାତୃଭାଷାରେ କାହାଣୀ, ଗୀତ କହି କଥାହେବା ଆବଶ୍ୟକ । ପୁସ୍ତକରେ ଯେତିକି ଶବ୍ଦ ଦିଆଯାଇଛି ତାହା ସାକ୍ଷରତାର ନମୁନା ମାତ୍ର । ପିଲାଏ ଏଭଳି ଶହ ଶହ ଶବ୍ଦ ଜାଣିଥାନ୍ତି । ସେମାନଙ୍କୁ ଗୋଟିଏ ବର୍ଣ୍ଣ ଥାଇ ଶବ୍ଦ ପଚାରିଲେ ଅନେକ ଶବ୍ଦ କହିପାରିବେ । ଉଦାହରଣ ସ୍ୱରୂପ, ଶିକ୍ଷକ 'କ'ରେ ଆରମ୍ଭ ହେଉଥିବା କେତେକ ଶବ୍ଦ କହିବା ପାଇଁ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ପଚାରିପାରିବେ ।

ପିଲାଙ୍କ ସୁବିଧା ପାଇଁ ପ୍ରଥମେ କୁଇ ଭାଷାରେ ଥିବା ବର୍ଣ୍ଣମାଳାରୁ ଗୀତ, ଶବ୍ଦ, ଅକ୍ଷର ଆଦି ଦିଆଯାଇଛି । ଏହା ଶିଖାଇଲା ବେଳେ ପିଲାଏ ଓଡ଼ିଆ ଧ୍ୱନି ଓ ଲିପି ମାତୃଭାଷାରୁ ଶିଖିପାରିବେ । ଏହି ପ୍ରବେଶିକା ପୁସ୍ତକର ଶେଷରେ ଓଡ଼ିଆର ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ବର୍ଣ୍ଣମାଳା ଦିଆଯାଇଛି । କୁଇ ଭାଷାରେ ବ୍ୟବହୃତ ହେଉନଥିବା ଓଡ଼ିଆ ଅକ୍ଷରଗୁଡ଼ିକ ବିଷୟରେ ପିଲାମାନେ ଏଥିରୁ ଜାଣିପାରିବେ । ସେହିପରି, ସଂଖ୍ୟା ଗଣନା ଓ ଅଭ୍ୟାସ ପାଇଁ ଏକରୁ କୋଡ଼ିଏ ଯାଏଁ ସଂଖ୍ୟା ମଧ୍ୟ ଦିଆଯାଇଛି ।

ଆମ ଶିକ୍ଷକ ଶିକ୍ଷୟତ୍ରୀମାନ ଓଡ଼ିଆ ସହ ଅଭ୍ୟସ୍ତ ହୋଇଥିବାରୁ ଜନଜାତି ଭାଷାର ଧ୍ୱନି ଉଚ୍ଚାରଣବେଳେ, ପଢ଼େଇବାବେଳେ ଅସୁବିଧାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୋଇଥାନ୍ତି । ଓଡ଼ିଆରେ ଦୀର୍ଘ ଓ ସ୍ୱର ଧ୍ୱନି ସମାନ ଭାବରେ ଉଚ୍ଚାରିତ ହୋଇଥାଏ, ମାତ୍ର ଲେଖିବା ସମୟରେ ଦୀର୍ଘ ଧ୍ୱନିର ମାତ୍ରା ଓ ଅକ୍ଷର ଲେଖାଯାଏ । ମାତ୍ର କୁଇରେ ସ୍ୱର ଧ୍ୱନିଗୁଡ଼ିକ ଦୀର୍ଘ ଭାବରେ ଉଚ୍ଚାରିତ ହେବା ସହ ଅର୍ଥ ପରିବର୍ତ୍ତନ ମଧ୍ୟ ହୋଇଥାଏ । ଉଦାହରଣ ସ୍ୱରୂପ, 'ଆଜି' ଭୟ, 'ଆ-ଜି' କୁଆପଥର, 'କଜୁ' କୁକୁଡ଼ା, 'କ-ଜୁ' ଶିଙ୍ଘ ଇତ୍ୟାଦି ।

କୁଇ ପିଲାମାନଙ୍କ ପାଇଁ ଓଡ଼ିଆ କହିବା ପଢ଼ିବାରେ ସହଜ ନହେଲେ ମଧ୍ୟ ସେମାନଙ୍କ ଭାଷା କହିବା ଓ ବୁଝିବାରେ କୌଣସି ଅସୁବିଧା ନାହିଁ । ଏହି ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକା ପୁସ୍ତକରେ ଦୀର୍ଘତା ପାଇଁ '-' ଚିହ୍ନ ଦିଆଯାଇଛି । ଦୀର୍ଘ ଉଚ୍ଚାରଣ ଓ ଦୁଇ ତିନୋଟି ବ୍ୟଞ୍ଜନ ଧ୍ୱନି ସହ ସ୍ୱର ଧ୍ୱନିର ସଂଯୁକ୍ତ ଉଚ୍ଚାରଣ, ଯେମିତି ଗ୍‌ଡ଼ବା, ଡ୍‌ଲାଉ ଆଦିର ଉଚ୍ଚାରଣ ଅଣକୁଇ ଭାଷାଭାଷୀ ଶିକ୍ଷକ ଶିକ୍ଷୟିତ୍ରୀଙ୍କ ପାଇଁ ସହଜ ହୋଇନପାରେ । ତେବେ, ପୁସ୍ତକରେ ଦିଆଯାଇଥିବା ଚିତ୍ରଗୁଡ଼ିକ ଯେହେତୁ କୁଇ ଭାଷାଭାଷୀ ସେମାନଙ୍କ ପରିବେଶରୁ ଆସିଛି, ପିଲାମାନେ ଚିତ୍ର ଦେଖି ତାହା ସହଜରେ କହିପାରିବେ । ଅତଏବ, ଉଚ୍ଚାରଣରେ କୌଣସି ଭୁଲ ନହେବା ଆଶା କରାଯାଏ । ଅଞ୍ଚଳ ଭେଦରେ ଏଥିରେ ସାମାନ୍ୟ ପରିବର୍ତ୍ତନ ଆସିପାରେ ଯେମିତି, ପଡ଼ସି/ପଣସି, କଇବିଦୁଲି/ କଇବିଦୁଡି । ଶିକ୍ଷକ, ଶିକ୍ଷୟିତ୍ରୀ ଏଥିପ୍ରତି ଧ୍ୟାନଦେବେ । କୁଇ ଭାଷାଭାଷୀ ଶିକ୍ଷକ ବନ୍ଧୁଙ୍କ ସହ ମଧ୍ୟ ଆଲୋଚନା କରିପାରିବେ । ସେହିପରି, ପିଲାଏ ପୁସ୍ତକରେ ଦିଆଯାଇଥିବା କେତେକ ଚିତ୍ରକୁ ଅଲଗା ଭାବରେ ଚିହ୍ନଟ କରିବାର ଆଶଙ୍କା କରାଯାଇପାରେ, ସେଥିପାଇଁ ତୀର ଚିହ୍ନ ଦିଆଯାଇଛି । ଶିକ୍ଷକ ସେଥିପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଧ୍ୟାନ ଦେବେ । ସେହିପରି, କୁଇ ଗୋଷ୍ଠୀରେ ବିଭିନ୍ନ ଅଞ୍ଚଳରେ ଭିନ୍ନ ଭିନ୍ନ ସଂଖ୍ୟା ଗଣନା ଦେଖିବାକୁ ମିଳୁଛି । ଏଣୁ, ଏହି ଭାଷା ପ୍ରବେଶିକା ପୁସ୍ତକରେ ଓଡ଼ିଶା ପ୍ରାଥମିକ ଶିକ୍ଷା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ପ୍ରାଧିକରଣଦ୍ୱାରା ପ୍ରକାଶିତ 'କୁଇ ଗଣିତ କାହା' (୨୦୧୩) ବହିରୁ ଗଣନା ସଂଖ୍ୟା ଦିଆଯାଇଛି ।

ମୌଳିକ ସାକ୍ଷରତା ଉପରେ ରାଜ୍ୟରେ ସ୍କୁଲଗୁଡ଼ିକୁ ଯୋଗାଯାଇଥିବା ଶିକ୍ଷକ ସହାୟକ ପୁସ୍ତକରୁ ଆପଣମାନେ ବିଶେଷ ଭାବରେ ଜାଣିପାରିବେ ।

ତଳେ ଦିଆଯାଇଥିବା ରେଖାଗୁଡ଼ିକୁ ଦେଖି ଚିହ୍ନିତ ସ୍ଥାନରେ ସେହିଭଳି ରେଖା କରନ୍ତୁ:

ଊର୍ଦ୍ଧ୍ୱଗ ରେଖା :

ଶାୟିତ ରେଖା :

ତେରଛା ରେଖା ୧ :

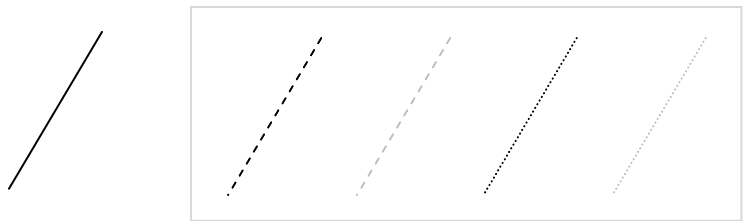

ତେରଛା ରେଖା ୨ :

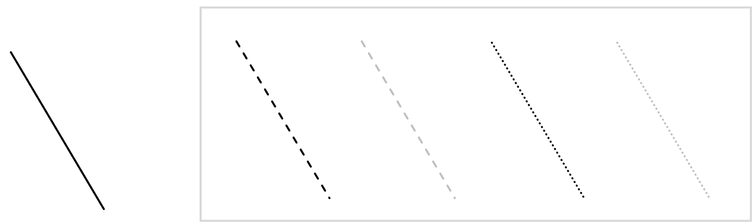

ବକ୍ର ରେଖା ୧ :

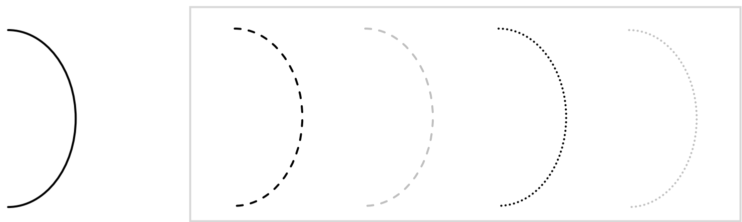

ବକ୍ର ରେଖା ୨ :

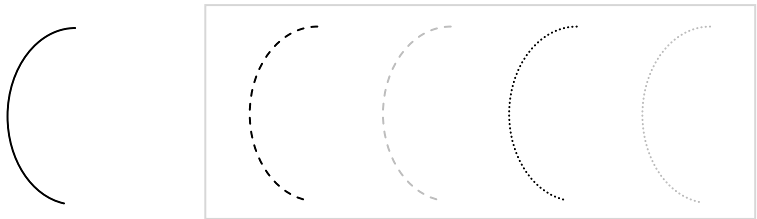

ଟିପଣୀ: ଶିକ୍ଷକ ପେନସିଲ ଧରି ଉପରେ ଦିଆଯାଇଥିବା ଚିହ୍ନିତ ସ୍ଥାନରେ କିପରି ରେଖା ଟାଣିବେ ତାହା ପିଲାଙ୍କୁ ଶିଖାଇବେ ।

କୁଇ ବର୍ଣ୍ଣମାଳା

ସ୍ୱର ବର୍ଣ୍ଣ

	ଅ	ଆ	ଇ	ଈ	ଉ	ଊ	ଏ
ମାତ୍ରା	→	◌ା	◌ି	◌ୀ	◌ୁ	◌ୂ	◌େ

ବ୍ୟଞ୍ଜନ ବର୍ଣ୍ଣ

କ	ଗ		
ଜ			
ଟ	ଡ	ଣ	
ତ	ଦ	ନ	
ପ	ବ	ମ	
ର	ସ	ହ	ଳ
◌ଂ	◌ଁ	◌ଃ	

ଅତିରିକ୍ତ ବର୍ଣ୍ଣ

ଡ଼	

ଅତିରିକ୍ତ ଚିହ୍ନ

ଦୀର୍ଘ ଉଚ୍ଚାରଣ ପାଇଁ	-
ହଳନ୍ତ (ସ୍ୱର ଲୋପ ଚିହ୍ନ)	◌୍

ଓଡ଼ିଆ ବର୍ଣ୍ଣମାଳା ଯାହା କୁଇରେ ନାହିଁ

ସ୍ୱର ବର୍ଣ୍ଣ

	ଋ	ଐ	ଓ	ଔ
ମାତ୍ରା	ୃ	ୈ	ୋ	ୌ

ବ୍ୟଞ୍ଜନ ବର୍ଣ୍ଣ

ଖ	ଘ	ଙ	
ଚ	ଛ	ଝ	ଞ
ଠ	ଢ	ଢ଼	
ଥ	ଧ		
ଫ	ଭ		
ଯ	ଳ	ୱ	
ଶ	ଷ	କ୍ଷ	ଋ

ଅତିରିକ୍ତ ବର୍ଣ୍ଣ

ଢ଼	

ଅ

ଅଡ୍‌ରି

ମୂଷା

ଅଡ୍‌ରି ସ-ଟେ ଗାରାତା,

ମେଅ ଜ-ତେ ଦା-ରାତା ।

ଅ-ଡ଼ା	ଛେଳି	ଡେଅଲି	ଦୋଳି	ମେ-ଅ	ବିଲେଇ

ଅ ଅ ଅ

ଆ

ଆଜା

ମାଆ

ଆଜା ଆ-ବା ଜେ-ଡା,
ବୁଡ଼୍‌ଜା କୂନା ମୀଡା ।

ଆର୍‌ଡା	ବାଡ଼	ଟୂଆଲି	ଗାମୁଛା	କୁଆ	କୂଅ

ଆ ଆ ଆ

ଈ

ଈଡ୍ଡୁ

ଘର

ଈଟା ଗୀଆନା ଈଡ୍ଡୁ ଗିନାସୁ,
ଜେ-ଡାଢ଼େ ଆ-ଜୁ ରାହିଆନାସୁ ।

ଈର୍‌ପି	ମହୁଲ	କ-ଈବିଦୁଲି	ଗୋବର ପୋକ	ସା-ଈ	ଶିମ୍ବ

ଈ ଈ ଈ

ଈ

ଈଡ଼ା

ହୁଡ଼ା

ଈଡ଼ା ଗୀଆନା ସିରୁ ଆଁ-ଗିନା,
କେତା ଡୂଆନା ପ୍ଲାହା ଉହିନା ।

ଡଈ	ଏଣ୍ଡୁଅ	ପାଈଂଗା	ପଇସା	କ୍ଲାଈ	ଖଳା

ଈ ଈ ଈ

ଊ

ଊଲି

ପିଆଜ

ଊଲି ସା-ରୁ ଏଂଗା ଅଜାଂଗା
ଆଡ଼୍‌-ସାନା ବାଜିନା ପଜକା,
ଏ-ଜୁ ଊନା ତସ୍‌ଲେକା ।

ଊତୁଲି	ଗୁଣ୍ଡୁରି ପୋକ	କାଊଲି	କଲିକା	ସ-ରୁକା-ଊ	କାନ୍ଦୁଲ

ଊ ଊ ଊ

ଊ

ଊଜୁ

ମାଂସ

ଊଜୁ ତିସେ ନାହଡ଼ି,
ମେ-ଅ ଆ-ତେ ବାହୁଡ଼ି ।

ଊରା	ଓରା	ବାଊଡି	ବଣଭୁଆ	ଡ୍ଲାଊ	ମୁଣ୍ଡ

ଊ ଊ ଊ

ଏ

ଏ-ଜୁ

ପଖାଳ

ଏ-ଜୁ ଉନା କାଲିତା,
କାହିନାସୁ ଡେଅଲିତା ।

ଏ-ସୁ	ପାଣି	ଜଏଲି	ମକା	କେ-ଲେଏ	ଦାଆ

ଏ	ଏ	ଏ	

କ

କ-ଡି

ବଳଦ

କ-ଡିକ-ରୁ କ-ପିନା,
ଅ-ଡା କଜୁ ଲକ୍ନା ।

କଜୁ	କୁକୁଡ଼ା	କ-କମେଡୁ	ପ୍ରଜାପତି	କଃକ	ବଗ

କ କ କ

ଗ

ଗହି

ଗୋଧି

ଗହି ସଲ୍ଜାନେ ଗାରାତା,
କଲେ ଜ-ପିନେ ଦାରାତା ।

ଗହା	ପାଟ ଖୋସା	ମା-ଗରି	ମାଗୁର	ପା-ଗ	ପଗଡ଼ି

ଗ ଗ ଗ

ଜ

ଜ-ଡ଼ି

ନଦୀ

ଜ-ଡ଼ି ସାଁ-ଜାନେ ତିରି ତିରିନା,
ଜ୍‌ରାହିନାସୁ ବା-ଦୁ ଜିଲିଜିଲିନା ।

ଜ-ମ୍ବା	ପିଢ଼ା	ପଜକା	ଭେଜି ବାଇଗଣ	ଜର୍‌ଜ	ବାଉଁଶ ଖଡ଼ିକା

ଜ ଜ ଜ

ଟ

ଟଇ

ଶୁଆ

ଟଇ ବାଇନେ ପାଁ-ଜାନା,
ସାଜିନେ ଜଏଲି ତିଂଜାନା ।

ଟ-ପା	ଚାଙ୍ଗୁଡ଼ି	ପିଟକା	ପିଠା	ନା-ଟ	ଗାଁ

ଟ ଟ ଟ

ଡ

ଡଲ୍‌ଗୁ

ଟାଙ୍ଗୁ

ଡଲ୍ ଡଲ୍ ଡଲ୍‌ଗୁ ଡ଼ୀନେ,
ପେଁ ପେଁ ମହେରି ଇନେ ।

ଡ-କା	ବେକ	ଗଡକି	କୋଡ଼ି	ମଡ	କଢ଼

ଡ ଡ ଡ

ଣ

ଗହଣି

ଗଉଣି

ଗହଣି ଲାଇ ପିଟକା
ତିଂଜାନା ମେଃଦୁ ସଟେକା,
ସେତେକା ତିଂଜୁ ଟୁଟେକା ।

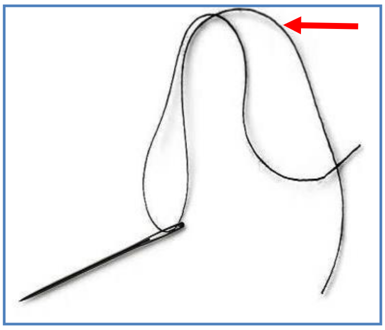

ସୀଣା	ଛୁଞ୍ଚି	ଗ-ଣି	ନଗି	ଟୀଣି	ଘଣ୍ଟି

ଣ ଣ ଣ

ଡ

ଡ-ଗା

ଡିମିରି

ଡ-ଗା ଡାନିଇ ସିରୁଡ଼ି,
ବୀକାଇମାନେ ପିରଡ଼ି ।

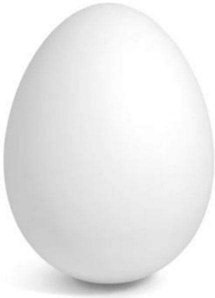

ଡ-ଲା	ଅଣ୍ଡା	ପା-ଡଲି	ବିଲାତି ବାଇଗଣ	କର୍ଡ	କରତ

ଡ ଡ ଡ

ଦ

ଦଗ

ଝର

ଦଗ ଦୀପ୍‌କିନେ ଗଦଗଦନା,
ସିରୁ ମୀନା ରେହାରେହାନା ।

ଦମକଲ	ଦମକଳ	ଗଦଡ଼ି	ଭୂଇଁ କଦମ୍ବ	ଗଦ	ଗଧ

ଦ	ଦ	ଦ	

ନ

ନ-ସୁ

ଦଉଡ଼ି

ନ-ସୁ ତେର୍‌ତେ କା-ଡୁତା,
ସିଆଲି ଦୀକାତେ ଗା-ଡାତା ।

ନଲକୁଆ	ନଳକୂଅ	ମୀନ୍‌ଗା	ମାଛ	ଡନ	ଠୋଲା

ନ ନ ନ

ପ

ପଟା

ଚଢ଼େଇ

ପଟା କପ୍‌କିନେ ଇଡୁତା,
ଜର୍‌ଜି ଗୀଆନେ କୁଡୁତା ।

ପଡ଼ସି	ପଣସ	ସାପ୍‌କା	କଣ୍ଟା	ଡିପ	ଡିବିରି

ପ ପ ପ

ବ

ବହେରି

ନଟୁ

ବହେରି କିର୍‌ପି ଗିନାସୁ,
ରେହା ରେହା ଆ-ନାସୁ ।

ବଲାଡ଼ି	ରାମଫଳ	ବାବଡ଼ି	ଫୋପଡ଼	ପ-ବ	ସୂତା

ବ	ବ	ବ	

ମ

ମ-ଡ଼ି

ମୁଣା

ମ-ଡ଼ି ଆହାନା ବାର୍‌ବା ମେଃକାନା,
ପିଟ ମୁରିଂଗା କଡାନା ଡାନା ।

ମହେରି	ମହୁରୀ	ଅମରତି	ଅମୃତଭଣ୍ଡା	ଦଲମ	କାଠଗଣ୍ଡି

ମ ମ ମ

ର

ରପା

କୋଦାଳ

ରପାଡ଼ାଇ ବା-ଲୁ ଡ଼ାଜିନା,
ଏମ୍ବା ଫିଂଜି ଫିଂଜି କାହିନା ।

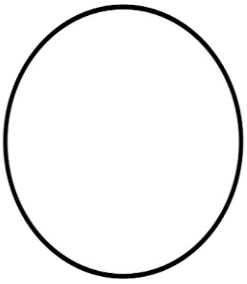

ରଇ	ଗୋଲାକାର	ପିରଡି	ବଂଶୀ	କନ୍ଜର	ଖଂଜଣି

ର ର ର

ସ

ସ-ଲା

ଘାସ

କଜୁ ଡ଼ାସ୍କିନେ ସ-ଲା,
କୁଆନା ତିନ୍‌ବା ପା-ଲା ।

ସଜୁ	ଝିଂକ	ଅସଥ	ଔଷଧ	ସର୍ସ	ସୋରିଷ

ସ ସ ସ

ହ୍ଲ

ହ୍ଲ-ରୁ

ପାହ୍ଲାଡ଼

ହ୍ଲ-ରୁତା ମାନ ମାହ୍ଲା ବା-ଡ଼େକା,
ଲିହ୍ଲେରି ମେଃନା ପେନି ବା-ତେକା ।

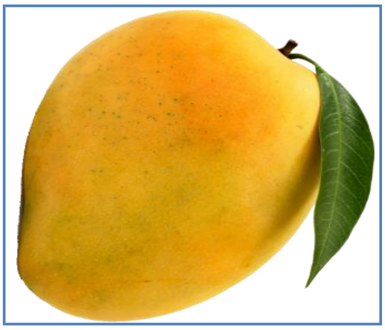

ଲିହ୍ଲେରି	କାକର	ଡହ୍ଲଣା	କଡ଼େଇ	ମାହ୍ଲା	ଆମ୍ବ

ହ୍ଲ ହ୍ଲ ହ୍ଲ

ଲ

ଲ-କା

ଅନ୍‌କା

ଲ-କା ବାର୍‌ବା ବା-ତେ,
ମା-ନ୍‌ଦେ ରେହା ଗା-ମିତେ ।

ଲହା	ଲୁହା	ପଲ୍‌କା	ଚଷୁ	ପ-ଲ	ଫଳ

ଲ ଲ ଲ

ଡ଼

ଗଡ଼

ପାଚେରୀ

ରାଜେନ୍ ତାରି ଗଡ଼ ଦେରାଡ଼ି,
ଗଡ଼ତା ଜ-ପିନେ ମୁରାଡ଼ି ।

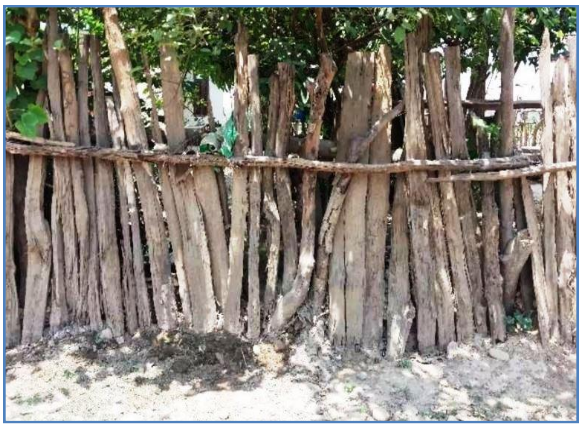

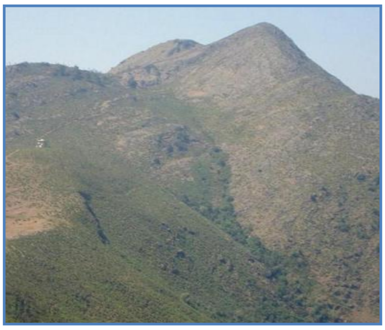

ଡ଼ଂଗା	ପାହାଡ଼ ଶିଖର	ଗଡ଼୍‌ବା	ମେଢ଼ା	କ-ଡ଼	କାଠଖଣ୍ଡ

ଡ଼ ଡ଼ ଡ଼

ବର୍ଣ୍ଣ	ମାତ୍ରା / ଚିହ୍ନ	ଉଦାହରଣ	ଉଦାହରଣ
ଅ		ଅଳି	ବିଅରି
ଆ	◌ା	ଜା-ନାଆ	ପାନା
ଇ	◌ି	ଡା-ଡ଼ି	ପାଜି
ଈ	◌ୀ	ପୀରି	ସୀରୁ
ଉ	◌ୁ	କ-ଡୁ	କ-ରୁ

ବର୍ଣ୍ଣ	ମାତ୍ରା / ଚିହ୍ନ	ଉଦାହରଣ	ଉଦାହରଣ
ଊ	◌ୂ	ପୂଜୁ	ରୂଟୁ
ଏ	େ◌	ନେଡି	ମେଡୁ
ଅନୁସ୍ୱାର	◌ଂ	ଡଂଗା	ଗଂଗ
ଚନ୍ଦ୍ରବିନ୍ଦୁ	◌ଁ	ଡାଁଜୁ	ଗାଁଜୁ
ବିସର୍ଗ	◌ଃ	ଟଃଟ	ଚିଃଚିରିଡ଼ି

ବର୍ଣ୍ଣ	ମାତ୍ରା / ଚିହ୍ନ	ଉଦାହରଣ	ଉଦାହରଣ
ହଲନ୍ତ	◌୍	ସଟ୍‌କା	ପାଟ୍‌କା

ସଂଖ୍ୟା			
୧	ରଣ୍ଡେ	ଏକ	
୨	ଜଡେକା	ଦୁଇ	
୩	ତିନି	ତିନି	
୪	ସାରି	ଚାରି	
୫	ପାନ୍ସ	ପାଞ୍ଚ	
୬	ସଅ	ଛଅ	
୭	ସାତ	ସାତ	
୮	ଆଟ୍	ଆଠ	
୯	ନଅ	ନଅ	
୧୦	ଦସ	ଦଶ	
୧୧	ଏଗାର	ଏଗାର	
୧୨	ବାର	ବାର	
୧୩	ତେର	ତେର	

୧୪	ସଉଦ	ଚଉଦ	
୧୫	ପନ୍‌ଦର	ପନ୍ଦର	
୧୬	ସୁଲ	ଷୋହଳ	
୧୭	ସତର	ସତର	
୧୮	ଅଟର	ଅଠର	
୧୯	ଅଣିସି	ଊଣେଇଶି	
୨୦	କଡେକା	କୋଡ଼ିଏ	

୧	୧	୧	୧	
୨	୨	୨	୨	
୩	୩	୩	୩	
୪	୪	୪	୪	
୫	୫	୫	୫	
୬	୬	୬	୬	
୭	୭	୭	୭	
୮	୮	୮	୮	
୯	୯	୯	୯	
୧୦	୧୦	୧୦	୧୦	

୧୧	୧୧	୧୧	୧୧	
୧୨	୧୨	୧୨	୧୨	
୧୩	୧୩	୧୩	୧୩	
୧୪	୧୪	୧୪	୧୪	
୧୫	୧୫	୧୫	୧୫	
୧୬	୧୬	୧୬	୧୬	
୧୭	୧୭	୧୭	୧୭	
୧୮	୧୮	୧୮	୧୮	
୧୯	୧୯	୧୯	୧୯	
୨୦	୨୦	୨୦	୨୦	

ଓଡ଼ିଆ ବର୍ଣ୍ଣମାଳା

ସ୍ୱର ବର୍ଣ୍ଣ						
ଅ	ଆ	ଇ	ଈ	ଉ	ଊ	
ଋ	ଏ	ଐ	ଓ	ଔ		

ବ୍ୟଞ୍ଜନ ବର୍ଣ୍ଣ						
କ	ଖ	ଗ	ଘ	ଙ		
ଚ	ଛ	ଜ	ଝ	ଞ		
ଟ	ଠ	ଡ	ଢ	ଣ		
ତ	ଥ	ଦ	ଧ	ନ		
ପ	ଫ	ବ	ଭ	ମ		
ଯ	ର	ଳ	ୱ	ଶ	ଷ	ସ
ହ	କ୍ଷ	ୟ	ଲ	ଂ	ଃ	ଁ

ଅତିରିକ୍ତ ବର୍ଣ୍ଣ	
ଡ଼	ଢ଼

ePathshala

Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala

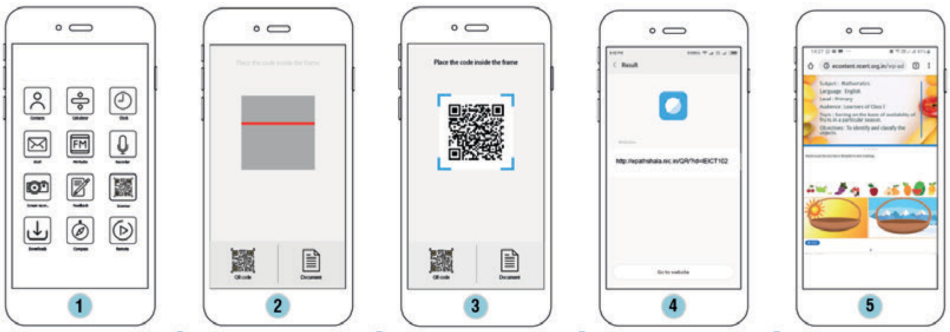

1. Install ePathshala Scanner app from Play Store and open
2. Get ready with QR code scanning window
3. Place scanner above the QR code
4. Select and click on the link
5. Use available e-Resource

For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://epathshala.nic.in/topics.php and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download **DIKSHA** app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using **DIKSHA**

1. Select preferred language
2. Choose your role: Student or Teacher
3. Grant access and allow app permissions
4. Tap to scan the QR code
5. Focus camera on the QR code in textbook
6. Click to Play QR code specific e-resource(s)

For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://diksha.gov.in/resources and enter the alphanumeric code given under the QR code

PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT (Phase-1)

SCHEDULED LANGUAGES

Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages
1	ASSAMESE	9	KONKANI	17	SANSKRIT
2	BENGALI	10	MAITHILI	18	SANTALI
3	BODO	11	MALAYALAM	19	SINDHI
4	DOGRI	12	MANIPURI	20	TAMIL
5	GUJARATI	13	MARATHI	21	TELUGU
6	HINDI	14	NEPALI	22	URDU
7	KANNADA	15	ODIA		
8	KASHMIRI	16	PUNJABI		

NON - SCHEDULED LANGUAGES

Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages
1	ADI	20	KINNAURI	39	MISING
2	ANAL	21	KISAN (KUNHU)	40	MIZO
3	ANGAMI	22	KODAVA	41	MOGH
4	AO	23	KOKBOROK	42	MUNDARI
5	BHILI (VASAVA)	24	KOLAMI	43	NYISHI (NISSI)
6	BHUTIA	25	KONDA	44	RABHA
7	BISHNUPRIYA MANIPURI	26	KORKU	45	RAI
8	DEORI	27	KORWA	46	SHERPA
9	DIMASA	28	KOYA	47	SAVARA (SORA)
10	GADABA (GUTOB)	29	KUI	48	SÜMI (SEMA)
11	GARO	30	KUKI	49	TAMANG
12	HALBI	31	KURUKH	50	TANGKHUL
13	HMAR	32	KUZHALE (KHEZHA)	51	TANGSA
14	JATAPU (KUVI)	33	LEPCHA	52	TIWA (LALUNG)
15	JUANG	34	LIANGMAI	53	TULU
16	KABUI	35	LIMBU	54	WANCHO
17	KARBI	36	LOTHA		
18	KHANDESHI	37	MAO		
19	KHARIA	38	MISHMI (IDU)		

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
0821 2515820 (Director) / ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
011 2696 2580 / dceta.ncert@nic.in